

छात्र समस्याओं से खूबसूरत हुआ प्रशासन

15 अक्टूबर 2008 को कॉलेज प्रबन्धन और छात्रों के आपसी संबंधों को एक नई दिशा मिली जब DOSA कॉलेज परिसर में व्याप्त विभिन्न समस्याओं एवं उनके निदान से संबंधित प्रश्नों एवं दुविधाओं का समाधान करने हेतु छात्रों से मुखातिब हुए। यह IIT इतिहास में पहली बार है कि इस प्रकार की बैठक आयोजित की गई।

पिछले काफी समय से छात्रों में समस्याओं का निदान न हो पाने के कारण रोष व्यक्त था। कई छात्रावास में अनुरक्षण और निर्माण कार्य की व्यवस्था दर्दनाक स्थिति में थी। निर्माण कार्य अधूरा छूट जाने के कारण सीमेंट, बालू इत्यादि यथा तथा छोड़ दिए गए जिसके कारण छात्रों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। सुरक्षा से संबंधित समस्याएँ बढ़ती ही जा रही थी। हाल में आजाद छात्रावास के एक छात्र को अज्ञात लोगों ने दिन दहाड़े छात्रावास में घुसकर मारने की धमकी दी। वह छात्र जब FIR दर्ज करवाने गया तो अव्यवस्था के कारण वहाँ भी उसे कई मुश्किलों से रू-बरू होना पड़ा। जलापूर्ति में अनियमितता, खाने की गुणवत्ता में लगातार कमी तथा अन्य बुनियादी जरूरतों के आभाव के कारण छात्रों में लगातार काफी समय से असंतोष रूपी बारूद जमा हो रहा था जिसमें चिनगारी डालने का काम किया 11 PM प्रतिबंध ने। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप एक बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया जिसमें छात्र अपनी समस्याओं को खुलकर जाहिर कर सके और संस्थान उनका स्पष्टीकरण दे सके।

उप निदेशक प्रॉ एम.चक्रवर्ती ने IIT की उपलब्धियों की विवेचना करते हुए सभा का प्रारंभ किया और आने वाली गतिविधियों के बारे में बताते हुए कई महत्वपूर्ण घोषणाएँ की।

प्रश्नोत्तर के दौरान छात्रों ने नियमों के कार्यान्वयन सुरक्षा के गार्ड के वार्तालाप शैली, जल, भोजन, चिकित्सा सुविधा, public smoking इत्यादि संबंधी समस्याएँ

सवाल : 11 pm ban की वजह से एक छात्र को हॉल के बाहर सोना पड़ा। यह कहाँ तक उचित है?

जवाब : इस तरह की उत्पन्न समस्याओं के लिए छात्रों को उससे संबंधित व्यक्ति जैसे वार्डन से उसी वक्त बात करने की आदत डालनी चाहिए।

सवाल : छात्र अपनी ID दिखाकर व रजिस्टर पर intime और outtime लिखकर बाहर से आना जाना क्यों नहीं कर सकते हैं?

जवाब : यदि आप इस परिसर में रहते हैं तो आपको यहाँ के नियमों का पालन करना होगा और सुरक्षा संबंधी मामलों में समझौता करना उचित नहीं है। हमारे पुराने अनुभव जैसे 1991 में 8 छात्रों का गिरफ्तार होना, बाहर के रेस्तरां में छात्रों का पिटा जाना इत्यादि हमें ऐसा करने पर मजबूर करते हैं।

सवाल : यदि कोई prof या guard हमसे सहयोग न करे तो उसकी शिकायत कहाँ दर्ज की जाएगी?

जवाब : हर समस्या का समाधान तुरंत नहीं निकलता पर हम इस दिशा में शीघ्र कार्यवाही करेंगे।

सवाल : B.C. Roy hospital में डॉक्टर उपलब्ध नहीं होते हैं। कई बार डॉक्टर्स द्वारा गलत दवाईयाँ देने का मामला भी सामने आया है?

जवाब : Medical facilities के मामले में हम काफी बुरी स्थिति में हैं पर मैं इसके जल्द समाधान का आश्वासन नहीं दे सकता। इसमें कुछ समय लगेगा। कोशिश होगी कि हर हॉल में एक डॉक्टर की व्यवस्था की जाए।

D.D. प्रॉ एम.चक्रवर्ती द्वारा सभा में जिक्र की गई बातें :

- > IITkgp की रैंक Dataquest में 1 और india today में 4
- > विश्व के 500 उत्कृष्टतम संस्थानों में एक IITkgp भी है
- > आने वाली गतिविधियाँ

- नया classroom complex
- नया laboratory complex
- नया tutorial complex
- नया पुस्तकालय
- 2000 क्षमता वाले 2 छात्रावास (लड़कों के लिए)
- 600 क्षमता वाला 1 छात्रावास (लड़कियों के लिए)
- नई जल संबंधी परियोजना

- > अगले वर्ष संस्थान को 60वीं वर्षगांठ पर 97 करोड़ मिलेगा
- > रखरखाव व साफ-सफाई हेतु 8 नए contractors sweeping contract लेंगे

Sweeping contract के अनुसार :

सफाई की आवृत्ति :

- | | |
|---|----------------|
| 1. सीढियाँ : | 2 बार प्रतिदिन |
| 2. बगीचा, आस-पड़ोस और बालकॉनी : | 3 बार प्रतिदिन |
| 3. Music, utility और common room , लाइब्ररी : | 2 बार प्रतिदिन |
| 4. कमरे : | 2 बार प्रतिदिन |
| 5. नाले और कचरा : | 1 बार प्रतिदिन |
| 6. छत : | 1 बार प्रतिदिन |
| 7. बागवानी और window panes : | 1 बार प्रतिदिन |

प्रबन्धन के समक्ष रखी। उप निदेशक ने उत्तर देते हुए कहा “Since we are passing through transition phase, we are all suffering. We are trying to change but nothing happens at the speed of your thought.” उन्होंने 2020 तक छात्रों की संख्या तिगुनी करने की बात को रखा। उनका कहना था कि कोई भी system perfect नहीं होता लेकिन वे हर संभव सुधार की कोशिश करेंगे। यदि छात्रों को कोई परेशानी हो तो वे उससे संबंधित व्यक्ति जैसे warden, assistant warden, security officers आदि से बात करने की आदत डालें।

VP अर्नव ने उप निदेशक से अपरिहार्य के मामलों में ban नियमों में कुछ सुधार करने की माँग की और 11 pm के समय को 12 pm तक करने का निवेदन किया। तत्पश्चात सेक्योरिटी ऑफिसर ने सुरक्षा संबंधी मामलों पर सुधार करने की आश्वासन दिया और किसी समस्या के दौरान सीधे संपर्क करने की बात कही।

मीटींग के तुरंत बाद public smoking के लिए दो सुरक्षा कर्मियों को टिक्का में smoking कर रहे कुछ लोगों के खिलाफ शीघ्र कार्यवाही की गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार sweeping contract तैयार कर लिए गए हैं जो अगले सेम से लागू हो जाएंगे।

DOSA ने बाहर निकलकर छात्रों से अलग से मुलाकात की ओर आश्वासन दिया कि शीघ्र ही एक email address उपलब्ध कराई जाए जिसमें छात्र अपनी समस्याएँ भेज सकें जो DOSA द्वारा स्वसंचालित होगी।

शेष भाग पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 2
Bob Dylan



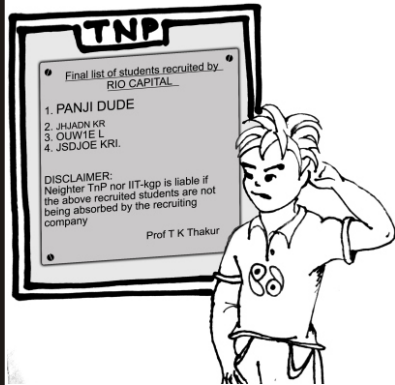
पृष्ठ 3
गार्ड की आवाज़



पृष्ठ 6
Medical forms



पंजी Dude



KGP के भूले-बिसरे Lingos

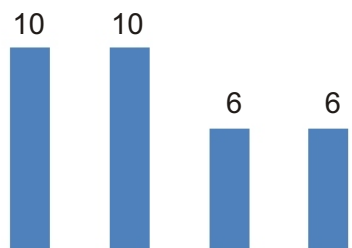
IAS
Invisible After Sunset

GC



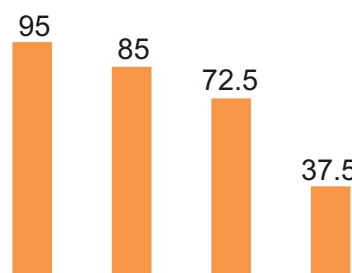
मीटर

Sports



PH RP NH LLR

Soc n Cult



PH NH AZ RP

RLB के सामने मेस वर्कर्स का प्रदर्शन

IIT KGP में जब से मेस निजीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई है तब से इस विषय से जुड़ा कोई ना कोई विवाद सुर्खियों में रहता ही है। HJB मेस में साँभर में मेढ़क की घटना तथा सभी प्राइवेट मेसों में खाने की गुणवत्ता की शिकायतों के बीच एक नये घटनाक्रम के तहत रानी लक्ष्मी बाई हॉल के वर्कर्स ने मेस निजीकरण तथा कॉन्ट्रैक्टर के विरोध में कई दिनों प्रदर्शन किया। वर्कर्स से बात करने पर उन्होंने बताया कि उन्हें तीन महीने से वेतन नहीं मिला है। साथ ही नये कॉन्ट्रैक्टर ने उन्हें उनके वेतन के बारे में भी नहीं बताया है। लेबर यूनियन के नेता मनोज दत्त ने कॉन्ट्रैक्टर से वर्कर्स की तरफ से बात की। उनके अनुसार मेस में सारी अव्यवस्था की जड़ मेस कॉन्ट्रैक्टर ही है।

मेस कॉन्ट्रैक्टर प्रशांत विशाल से बात करने पर उन्होंने बताया कि यह सब विरोध प्रदर्शन वर्कर यूनियन की आंतरिक राजनीति का हिस्सा है। उन्होंने बताया कि कॉन्ट्रैक्टर के तहत उन्हें प्रत्येक 25 छात्राओं पर एक वर्कर रखना था। चूंकि रानी लक्ष्मी बाई हॉल में 160 छात्राएँ हैं, अतः उन्हें सात वर्कर रखने थे किंतु उन्हें 13 वर्करों को रखने के लिए बाध्य किया गया। विशाल के अनुसार इस कारण उन्हें सात स्थायी तथा छः अस्थायी वर्कर रखने पड़े। उनके अनुसार सभी वर्करों को उचित वेतन दे दिया गया है तथा यह विरोध केवल राजनीति का परिणाम है। उनके अनुसार मेस में सभी कार्य सही तरीके से हो रहे हैं।

इस विरोध प्रदर्शन में दूसरे हॉलों से भी वर्कर थे। अतः यह प्रदर्शन मेस निजीकरण के विरोध में वर्करों का एक सम्मिलित प्रदर्शन भी था। वैसे देखा जाए तो इस निजीकरण से कोई भी संतुष्ट नहीं है। निजी मेसों में खाने की गुणवत्ता पर कई शिकायतें आने के बावजूद भी कोई कदम नहीं उठाया गया है। रानी लक्ष्मी हॉल की छात्राएँ 1560 रु प्रतिमाह मेस चार्ज के रूप में दे रही हैं जो कि अन्य हॉलों की अपेक्षा ज्यादा है। फिर भी खाने की गुणवत्ता अन्य हॉलों की अपेक्षा काफी खराब है। साथ ही यहाँ कोई मेस ड्यूटी नहीं होती है। अतः खाने की गुणवत्ता पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण नहीं है। कम्प्लेन रजिस्टर में कई बार शिकायत लिखने पर भी उसे ठीक करने हेतु कोई कदम नहीं उठाया जाता है।

IIT Mumbai में भी निजी मेस व्यवस्था है किंतु वहाँ मेस वर्करों को यहाँ की तुलना में ज्यादा वेतन मिलता है। वहाँ का खाना भी यहाँ की तुलना में काफी बेहतर है। प्रशासन आज के इस परिदृश्य में अगर छात्रों के ऊपर कड़ाई करने के बजाए उन्हें मिलने वाले खाने पर अधिक ध्यान दे तो शायद छात्रों के लिये ज्यादा हितकर रहेगा।

तरंग

DC टॉप 5 :

1. Obama-McCain final debate
2. Tribute to Dada(compilation)
3. Money as Debt(documentary)
4. "Persepolis" (animated फ़िल्म)
5. America: Freedom To Fascism(documentary)



“Dylan कौन ?”

इस वर्ष 20वीं सदी के महानतम गीतकारों में से एक Bob Dylan को अमरीका का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार पुलिट्ज़र मिला। और इसी के साथ Dylan की विवादों की लंबी फ़ेहरिस्त में जुड़ गया एक और विवाद। क्या Bob Dylan के गीतों को साहित्य कहा जा सकता है?

60 के दशक से ही जब Dylan अपने politically charged गीतों से rebel movement के सितारे बने, दुनिया भर में उनके करोड़ों दीवाने हो गए। चाहे वह Vietnam war हो या फिर Hippie movement, हर मौके पर Dylan के गाने आम जनता तथा सभी दोनों में ही काफी लोकप्रिय साबित हुए। लेकिन उनके आलोचकों का कहना है कि उनकी ख्याति सिर्फ self-hype और pseudo-intellectualism की उपज है।

इसमें तो कोई दोमत नहीं है कि Dylan के गीतों की सादगी अव्वर उनकी मर्मभेदी प्रवृत्ति को छुपाती है। “Knockin’ on Heaven’s Door”, “A Hard Rain’s a-gonna-fall” जैसे गीत अमरीका और यूरोप के कॉलेजों में पढ़ाए जाते हैं। पिछले 20 वर्षों में उनका नाम साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए 3 बार आ चुका है। ऐसे में उनके आलोचकों को अब हार मान लेनी चाहिए। शायद

Dylan खुद भी उनसे कह रहे हैं

“How does it feel...

To be on your own

With no direction home...

Like a complete unknown

Like a rolling stone.....”

“Money as debt” : एक सराहनीय प्रयास

इन दिनों financial crisis के बारे में Kgp की जनता और जानने के प्रयास में Canadian निर्देशक Paul Grignon की फिल्म “Money as Debt” देख रही है। सिर्फ 47 मिनट की इस documentary में काफी सरल तरीके से पूरे financial system को समझाया गया है।

आप भी देखिए और enlightened हो जाइये!

एक पहलू ऐसा भी

“हवा-महल”

Aviation Industry में मचे हाहाकार से वहाँ की staff सड़क पर नारेबाजी करने को मजबूर हो चुकी है। हज़ारों air-hostesses, flight attendants, stewards इत्यादि को “pink slip” मिलने के बाद(कईयों को मात्र SMS के through) एक बार तो साफ़ है : Newspaper एवं TV पर Air-Hostess/Flight Attendants की विभिन्न “Academies” के इशतेहार जिस स्वर्णिम भविष्य के ख्वाब दिखाते हैं वास्तविकता उससे कोसों दूर है।

10 साल में तीसरा बुकर

भारतीय लेखक Aravind Adiga को 2008 के पुरुष वर्ग के Booker पुरस्कार से नवाजा गया। गौरतलब है कि पिछले 10 वर्षों में ये ऐसा तीसरा मौका है जब एक भारतीय लेखक को यह पुरस्कार मिला है। (1997-Arundhati Roy, 2006-Kiran Desai) पर क्या ये महज़ एक इत्तेफ़ाक है?

या फिर हम साहित्य तथा कला की दुनिया में एक नए दौर की दहलीज़ पर खड़े हैं? एक ऐसा दौर, जिसमें चाहे Vikram Seth या Kiran Desai जैसे लेखक हों या फिर Manoj Shyamalan, Tarsem Singh जैसे फिल्मकार, creative world के नए महानायक भारतीय रहेंगे।

भारत एक ऐसी सभ्यता है जहाँ पर प्राचीन कलाएँ तथा रीतियाँ अभी भी जीवित हैं। पूँजीवाद के mall-रूपी बीजों ने पूरी तरह अपना डेरा नहीं बसाया है। ज़ाहिर सी बात है कि हमारी कल्पना की उड़ान औरों के मुकाबले ज़्यादा बुलंद है। देखना बस ये है कि हमारी कल्पना किस प्रकार की क्रांति लाती है!

इनसे क्या कहें ?

अमेरिका के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार John McCain की जोड़ीदार उप राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार Sarah Palin का कहना है “ मेरी नज़र में Global Warming कोई man-made समस्या नहीं है” शायद उन्हें ये नहीं पता कि अमेरिकी, जो दुनिया की चार प्रतिशत आबादी हैं, कुल मिला कर 30 प्रतिशत Carbon Dioxide तथा अन्य greenhouse gases बनाते हैं! पर एक बात तो पक्की है : अगर Palin इसी तरह के बयान देती रहीं तो कम से कम हमें President Bush की कमी महसूस नहीं होगी।

छोटी-छोटी मगर मोटी बातें



शक्तिमान : “कमरे से निकलने से पहले अपना कंप्यूटर और पंखा-बत्ती बंद करना ना भूलें। इससे हर माह छात्रों पर पड़ने वाला बिजली के बिल का अतिरिक्त भार कम होगा और ऊर्जा की बचत भी होगी।”

बिजली के अनवांछित खपत का अंदाज़ा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि पिछले सत्र की अपेक्षा इस सत्र में सभी छात्रावासों का बिजली का बिल लगभग दोगुना हो गया है, जिसके कारण सभी छात्रों को अतिरिक्त बिल का भुगतान करना पड़ रहा है।

कुछ तो पागल होते हैं... : गोयल इन्फोटेक

हमारी आवाज़ टीम ने गोयल इन्फोटेक के कर्ता-धर्ता श्री मनोज अग्रवाल से बातचीत की। उसके प्रमुख अंश कुछ इस प्रकार हैं।

आवाज : आपका नाम?

गोयल : मनोज अग्रवाल।

आवाज : कब शुरू किया यह बिजनेस?

गोयल : सन् 2000 में।

आवाज : इसका विस्तार करना चाहेंगे?

गोयल : जी कैम्पस के अंदर भी दुकान खोलने का विचार है। देखिए कहीं कोई झाड़ साफ होती है तो हम उस जगह को झाप लेंगे।

आवाज : अब तक की सबसे बड़ी समस्या ?

गोयल : स्टूडेंट्स द्वारा पूरी राशि न चुकाने के कारण 6-7 लाख रुपये का नुकसान हुआ। मेरी जगह कोई और होता तो भाग जाता। पर यहाँ का अकेला शेर तो मैं हूँ। S. K. Infotech और Tejas Technology वाले मेरे सहपाठी थे वो भी competition के चक्कर में बर्बाद हो गए और भाग गये। मैंने कुछ देर पहले कहा था ना कि मैं ही अकेला शेर हूँ इस kgp के जंगल का।

आवाज : मौजूदा समय की प्रमुख समस्याएँ क्या हैं?

गोयल : पहला तो सिक्योरिटी जिसके कारण स्टूडेंट्स सर्विसिंग के लिए कैम्पस के बाहर नहीं आते। दूसरा MMM Hall से काफी दूरी है जिससे स्टूडेंट्स कैम्पस में घूम-घूमकर कंप्यूटर बेचने वालों से भी खरीद लेते हैं। कंप्यूटर न हुआ, कपड़े की दुकान हो गयी।

आवाज : आपमें और दूसरे दुकानदारों में क्या फर्क है?

गोयल : दूसरे सिर्फ बेचते हैं हम 100% सर्विस की गारण्टी भी देते हैं। आप हमसे खरीदो, और आपके बच्चे मुझसे सर्विसिंग करवाएँ।

आवाज : क्या अपने बिजनेस से संतुष्ट हैं?

गोयल : बिल्कुल नहीं, 1% भी नहीं। बताओ काम मैं करता हूँ और सब आपके sponors के लिए मुझसे ही पैसे ले लेते हैं।

आवाज : अगर IIT कहीं और शिफ्ट हो जाए तो क्या अपनी दुकान भी वहाँ शिफ्ट करेंगे?

गोयल : जरूर करेंगे और वहाँ भी अपना झंडा गाड़ेंगे। हम तो हर IIT में अपना परचम लहराएँगे। चाहे जो हो जाए, जहाँ यह रहेगा, वहीं हम रहेंगे।

आवाज : IITians के बारे में क्या विचार हैं?

कुछ तो पागल होते हैं। क्या बोलते हैं समझ नहीं आता।

आवाज : आपकी सेहत का राज क्या है?

दिनभर दुकान पर बैठने और समय से न खाने की वजह से मोटा हो गया हूँ ना कि ज्यादा खाने से।

अम्त में उन्होंने कहा- “जैसे कोलकाता के IT world का दिल है – G. C. Avenue, वैसे ही Kgp के IIT world का दिल है – पुरी गेट। यहाँ हमारी वजह से ही मार्केट विकसित हुआ है।”

अथ गार्ड चिंतन कथा

सोच एक जटिल प्रक्रिया है। बिल्कुल जलेबी के mathematical equation की तरह। कोई कैसे सोच सकता है, इसकी कोई सीमा नहीं। मैं cream separation पढ़ते वक़्त सोच रहा था कि यशोदा मैया ने श्रीकृष्ण को मक्खन खिलाते वक़्त सोचा होगा कि ये centrifugal force का कमाल है? खैर हम टेक्नीकल लोग बहुत सी बेफिज़ल बातें सोच लेते हैं मगर यहाँ बात उस बेचारे सीधे सादे गार्ड की है जो दुर्भाग्यवश IIT पहुँच गया है।

तो गार्ड साहब सबसे पहले नजर पड़ती है पुरी गेट के साईन बोर्ड पर। लिखा मिलता है “The Gateway of Engineering”। और सोच शुरू होती है “इतना बड़का कॉलेज और अइसा मिस्टेक ! Gateway तो India का होता है उ भी बम्बई में! इहाँ लगता है नकल कर रहे थे सो गलती लिखा गया, सोचे होंगे जंग लग गया है अब कउन देखता है मगर हम भी मैट्रिक पास हैं, एके बार में पकड़ लिए!”।

IIT में साईकिलों की स्थिति देख कर लगता है कि आस पास कहीं किसी पुरातन सभ्यता की खुदाई हुई है। तो इनको देख कर गार्ड साहब की आर्थि क चेतना जाग गई सोचा “बंगाल में वास्तव में बड़ी गरीबी है, हमारे गाँव के छोकरे भी मोटरसाईकिल से घूमते हैं!”

गार्ड साहब को रात भर पुरी गेट पर जागना होता और लड़के बेफिज़ल जाग कर cheddi's में chillout करते। गार्ड साहब सोचते “न खुद सोते हैं न हमको

सोने देते हैं। लगता है कि जैसे सबको चमगादड़ काट लिया है। सुनते थे बड़ी पढ़े लिखे वाले आते हैं, इहाँ लेकिन इहाँ तो सब मटरगश्तीएँ में लगे रहते हैं। लगता

है सब जगह परीक्षा में चोरीएँ चलता है आजकल। समझ में नहीं आता है ई देश कइसे चलेगा। वैसे ई छेदिया चाय में जरूर कुछ मिलाता है, हमरे गाँव में भी रात में सब गंजेडिये जुटता हैं। एक बार पता चल जाए तो इसको बताएँ हम।”

वैसे अब समस्या हल हो गई है 11 बजे के बाद कोई बाहर नहीं जा सकता और गार्ड साहब चाहें तो गेट बंद कर के आराम से सो सकते हैं।

मगर इस देश में आम आदमी को चैन से सोना नसीब ही कहाँ है, वो भी गार्ड साहब जैसे चिंतनशील प्राणी को। अबकी बार गार्ड साहब की ड्यूटी ब्रिकमशिला में लग गई। अब और भी विचित्र चीजें देखने को मिलतीं। पहली बार लैपटॉप देखकर गार्ड साहब ने सोचा “सब बिगड़ गया है बाहर भी निकलता है तो थैला में टीवी ले के!”

रोज societies की मीटींग से गार्ड साहब को राहत मिली सोचा “कम से कम कुछ बच्चा तो यहाँ आ के पढ़ता है, होस्टल में ज्यादा हल्ला होता होगा!”

खैर सोचने पर रोक नहीं है कुछ भी सोचा जा सकता है। वैसे हमारी आखिरी मीटींग में गार्ड साहब मंत्रमुग्ध हमारे पीछे खड़े थे।

परेशानियों से परेशान...

जीवन परेशानियों का शायद बहुत नजदीकी रिश्तेदार हैं। जीवन हमें सवाल देती है, जवाब ढूँढ़ने निकलो और किसी मोड़ पर जवाब से भेंट हो जाए तो जीवन सवाल ही बदल देती हैं। IIT जीवन का अभिन्न अंग है परेशानी। हमारी परेशानी है कतार से और कीर्ज़ों से।

खड़गपुर को लोगों ने खड़ापूर बना दिया, 'ग' की टाँग तोड़कर क्योंकि हर काम करवाने के लिए एक लंबी कतार में खड़ा होना अनिवार्यता है वरना आप काम करवाने के लिए Eligible नहीं हैं या वो SF का Program हो या Registration या Interview या mess का सड़ा खाना खाने की बात। चलिए ये तो पुरानी बातें हैं।

हाल ही की बात है IIT के कैम्पस में जन्मे नये कीर्ज़ों के सरदार ने एक मीटींग बुलाई। वहाँ कल्लू कीड़े ने कहा “हमारे पूर्वजों के कई वर्षों से हो रहे सामूहिक हत्या को कतई बर्दास्त नहीं किया जाएगा” और हम आधुनिक जमाने के कीर्ज़े illu को रोकने के लिए भरपूर योगदान देंगे और उन्होंने नारा लगाया

“कतार में खड़े इन कीर्ज़ों पर कतार बनाकर हमला करें”। अब आप ही देखिए नारे में भी हम कतार में खड़े हैं.....।

अब तो हर कीर्ज़ों में कीड़ा बचाओ अभियान को सफल बनाने का ज़ुब्बा छा गया। हर चौक चौराहे, गली हर बल्ब, ट्यूबलाईट पर उन्का कब्ज़ा। हर कोई रूम बंद करके अंधेरे में बैठना पसंद करने लगा ताकि कीर्ज़े कहीं देख न लें। और कीर्ज़ों का एक ही मकसद बन गया “अंधेरा कायम रहे”।

हम भी कम जिद्दी नहीं थे। हमने हर कोशिश की। दरवाजे बंद किए, दवाई डाली पर उनके प्रतिद्रोह के खिलाफ टिक नहीं पाए। कहीं एक छोटी जगह भी छूट जाती तो कीर्ज़े उसे भी ढूँढ़कर अंदर आ जाया करते। ये तो उनका Talent था।

आखिरकार हार मानकर कीर्ज़ों और हमारे नेता के बीच बैठक बुलाई गई। काफी लड़ाई झगड़े के बाद ये निर्णय लिया गया कि इस बार illu नहीं होगा। हमारे प्रतिनिधि ने पूर्व हत्याओं के लिए खेद व्यक्त किया और कीर्ज़ों ने कहा दीवाली के बाद वे हमें छोड़कर कहीं दूर चले जाएँगे।

बात संपादक की

हम अत्यंत हर्ष के साथ अपने पाठकों के सम्मुख आवाज़ के वर्तमान सत्र के तीसरे अंक को प्रस्तुत करते हैं। इस अंक के साथ ही आवाज़ अपने दो वर्ष को पूर्ण कर, और अधिक ऊर्जा तथा निष्ठा के साथ अपने सफर पर अग्रसित हो रहा है। अभी तक का सफर हमारे लिए कुछ खट्टे कुछ मीठे अनुभवों से भरा रहा है। हमारी हमेशा से यही कोशिश रही है कि हम Kgp से संबंधित सभी पहलुओं को बेबाक रूप से प्रस्तुत करें और हमें गर्व है कि हम इसमें काफी हद तक सफल भी रहे हैं। हम स्वीकार करते हैं कि कई मौकों पर हम अपना श्रेष्ठतम देने में असफल रहे हैं पर हमने अपनी हर गलती से कुछ ना कुछ सीखा है। इस अवसर पर हम अपने पाठकों को भी धन्यवाद करना चाहेंगे। यह आप ही हैं जिन्होंने आवाज़ पर अपना विश्वास बनाए रखा तथा हमें जनता की आवाज़ बनाने में अपना योगदान दिया।

आवाज़ निरंतर बदलाव के विचार से पूर्णतः प्रेरित है इसलिए इस अंक में जहाँ हमने प्रस्तुतिकरण में भारी बदलाव किए हैं, वहीं 'तरंग', 'एक पहलू ऐसा भी' तथा 'सॉरी शक्तिमान' जैसे नवीन तथा रोचक स्तंभों का समावेश भी किया है। आशा है कि हमारा यह प्रयास आप सबको पसंद आएगा।

कैम्पस में हाल में घटी कुछ घटनाओं पर नज़र डाली जाए तो 'ओपन हाउस फोरम' का आयोजन निर्विवादित रूप से सबसे विवादित घटना रहेगी। IIT Kgp के इतिहास में पहली बार एक ऐसे सर्वसामान्य मंच का गठन हुआ जहाँ पर संस्थान प्रबंधन तथा छात्र खुल कर अपनी समस्याओं को लेकर एक दूसरे से रूबरू हुए। इस मंच के द्वारा जहाँ छात्रों ने अत्यंत आक्रामक ढंग से प्रशासन पर 11 pm ban, छात्रावासों की खस्ताहाल स्थिति आदि विषयों को लेकर हल्ला बोल दिया, वहीं प्रशासन कई मौकों पर अपनी बगले झाँकते हुए पाया गया। जहाँ प्रशासन ने कई मुद्दों पर अपनी असमर्थता जतायी वहीं अन्य मुद्दों पर शीघ्र ही ठोस कदम लेने का आश्वासन भी दिया।

कैम्पस की दूसरी प्रमुख खबरों कि बात की जाए तो वह रहेगी illu को लेकर छात्र और प्रशासन के बीच उपजी असमंजस की स्थिति। हालांकि दुर्गा पूजा अवकाश के पहले सभी HPs ने illu कराने में अपनी असमर्थता जताते हुए illu के आयोजन से मना कर दिया था फिर भी प्रशासन के प्रयासों के फलीभूत HPs, VP तथा प्रशासन के बीच काफी विचारविमर्श हुआ। काफी हाँ-हाँ, ना-ना के बाद आखिरकार illu का भाग्य निर्धारित हुआ तथा इस वर्ष illu न कराने के विचार को सहमति मिली। कैम्पस में इस निर्णय को लेकर काफी मिश्रित प्रक्रिया

मिली। निश्चित ही इस कदम से संस्थान की वर्षों से चली आ रही परंपरा को गहरा धक्का लगा है परंतु एक नज़रिए से देखा जाए तो यह मामला हाल के समय में छात्रों तथा प्रशासन के बीच घटती हुई संगतता तथा विश्वास से काफी हद तक प्रेरित है। आज संपूर्ण छात्र समुदाय प्रशासन के 11 pm ban जैसे असंगत आदेश को अपने लिए प्रतिकूल पाकर आक्रोश से भरा हुआ है। आगे और न जाने ऐसी कितनी परिस्थितियों से Kgp को गुज़रना पड़ेगा इसके बारे में हम कुछ ना कहना ही पसंद करेंगे।

अब थोड़ी बात करते हैं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैले हुए आर्थिक संकट की। वॉल स्ट्रीट के इस संकट का असर अब धीरे-धीरे भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता नज़र आ रहा है। रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया तथा वित्त मंत्री श्री पी चिदम्बरम के लगातार आश्वासन के बावजूद सेंसेक्स को गत वर्षों में सर्वाधिक मंदी के दौर से गुज़रना पड़ रहा है। रूपया डॉलर की अपेक्षा 50 के आँकड़े को छू रहा है। फिलहाल तो इस विश्वव्यापी आर्थिक विपदा से उबरने का कोई हल दिखाई नहीं पड़ रहा पर बुश सरकार द्वारा दिवालिया होते कुछ बैंक्स को बचाने के आखिरी उपाय के अंतर्गत 700 बिलियन डॉलर की राशि का bailout एक साराहनीय प्रयास है।

अक्टूबर 11 की तारीख भारत के लिए विश्व के समक्ष कूटनीतिक सफलता के रूप में इतिहास में दर्ज हो गयी है। इसी दिन भारत और अमेरिका के मध्य परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इसके साथ ही भारत विश्व की अग्रणी परमाणु शक्तियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हो गया है। भारत के साथ ही साथ यह समझौता भारत सरकार के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। ज्ञात रहे कि यह वही मुद्दा है जिसके कारण वर्तमान सरकार की कुर्सी सकते में आ गई थी और उसे संसद में शक्ति परिक्षण से गुज़रना पड़ा था। इस मुद्दे से श्री मनमोहन सिंह की छवि में भी काफी परिवर्तन आया है। उन्होंने अपने आलोचकों को यह सिद्ध कर दिया है कि वह सशक्त भारत के एक सशक्त प्रधानमंत्री हैं, नाकि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे एक कठपुतली जिसकी डोर किसी और के हाथ में है।

इस प्रकार से यह माह Kgp, राष्ट्र तथा विश्व के लिए अत्यंत हलचल वाला रहा। इन्ही हलचलों पर कुछ लेख हम अपने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अगले अंक में पुनः आप सबसे रूबरू होने के वायदे के साथ अलविदा लेते हैं!

खुला मंच

प्लेसमेंट का समय निकट आ रहा है। कई कम्पनियों के PPTs हो चुके हैं और कई होने वाले हैं। यहाँ आने वाली ज्यादातर कम्पनियों में जो एक समानता नज़र आती है वो यह है कि, कम्पनियाँ यहाँ इंजीनीयर की तलाश में नहीं आती, बल्कि ITans को recruit करने ही आती हैं। कई कम्पनियाँ तो ये बातें खुलेआम कबूल करती हैं और बाँकियों के चयन पद्धति से यह बात साफ़ झलकती है। तो ऐसा क्या है ITs में जो इन बड़ी कम्पनियों को इनकी ओर खींचता है? (यहाँ गौरतलब बात यह है कि हमारे पास मूलभूत सुविधाएँ तथा अच्छी फ़ैकल्टी का जो लाभ है वो इंजीनीयरिंग तक ही सीमित है और चूंकि कम्पनियाँ यहाँ इंजीनीयरों के लिए तो आती नहीं हैं तो इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने के संदर्भ में यह लाभ कोई मायने नहीं रखता)

जी हाँ इस प्रश्न का उत्तर हम सभी को पता है। और अगर हम ये कहें कि जिन्दगी के चार-पाँच साल यहाँ बिताने के बाद हम जो कुछ भी बनते हैं उसमें जितना योगदान हमारी पढ़ाई का है उससे कहीं बड़ा योगदान उन गतिविधियों का है जो हम Main Building और Departments के बाहर, हॉल या जिमखाना में करते हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। और हमारी इन गतिविधियों के लिए संस्थान प्रशासन का सहयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसका हमें आज तक कभी आभाव महसूस नहीं हुआ। लेकिन विगत कुछ दिनों से छात्रों में एक असंतोष व्याप्त है कि हमारी स्वतंत्रता पर लगाम कसी जा रही है। खड़गपुर की प्रसिद्ध 'नाईट लाईफ' में अवरोध सा महसूस हो रहा है। ग्यारह बजे के बाद मुख्य द्वार से आने-जाने की अनुमति नहीं है। दिन भर Department में बिताने के बाद रात को मीटिंग या इंटर हॉल प्रैक्टिस और उसके बाद 2 बजे रात में छेदीस पर टिकू चाय और दोस्ती के साथ माट अब इतिहास लगने लगे हैं।

प्रशासन के शब्दों में कहें तो ये कदम हमारी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उठाए गए हैं। परन्तु ये बातें जब आप 21-22 साल के युवकों से कहते हैं और अगर इसके पीछे कोई बड़ा कारण ना हो तो इसे मानना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। स्कूलों से निकल के बच्चे जब कॉलेजों या उच्च शिक्षण संस्थानों में जाते हैं

तो उन्हें पता होता है कि यहाँ ज़िंदगी बिलकुल आसान नहीं होने वाली है, फिर भी वे इसका बेसब्री से इंतज़ार करते हैं तो इसलिए कि यहाँ उन्हें जो स्वच्छंदता, जो आज़ादी मिलती है, वो उन्हें ज़िंदगी का सामना करना सिखा जाती है। और अगर यहाँ आने के बाद कोई उन्हें यह बताए कि उनकी सुरक्षा के लिए उनकी आज़ादी पर नकेल कसी जा रही है, ते बरबस ही उपनिवेशवाद का वो दौर याद आ जाता है जब कुछ देश अन्य देशों को 'सभ्य बनाने' के लिए उनपर शासन करते थे।

खेर, ये और इस जैसे जनता की कई समस्याओं को सुनने के लिए कुछ दिनों पहले (संस्थान के इतिहास में पहली बार) एक 'ओपन हाउस' का आयोजन हुआ, इस उम्मीद में कि प्रशासन और छात्रों के बीच सीधा सम्पर्क हो सके। हालाँकि सत्र काफी लम्बा चला लेकिन कोई निष्कर्ष निकल ना पाया। छात्रों द्वारा बार-बार ये बात रखी गई कि समय की मांग हो तो उन्हें कड़े नियमों के लागू होने से परेशानी नहीं है, लेकिन नियम लागू करने से पहले छात्रों को विश्वास में लिया जाए और कोई भी नया नियम बनाने से पहले ये ज़रूर ध्यान दिया जाए कि सभी नियम हमारी बेहतरी के लिए होते हैं तो ऐसे निर्देश जिनसे किसी का भला नहीं होना है, उन्हें दरकिनार किया जा सकता है। प्रशासन ने वैसे तो छात्रों की बात सुनने और भविष्य में उनकी समस्याओं के लिए ऐसे और सत्रों का भरोसा दिलाया है, लेकिन जबतक छात्र-प्रशासन संबंधों में परस्पर विश्वास का माहौल कायम ना हो, कोई समाधान निकलना मुश्किल ही जान पड़ता है।

छात्रों को विश्वास में नहीं लेने में गलती प्रशासन की है या उनका विश्वास न जीत पाने में स्वामी हमारी है, वजह जो भी हो यह बात तो पक्की है कि व्यस्कों से स्कूली बच्चों की तरह व्यवहार करना जायज़ नहीं है। ज़रूरत इस बात की है कि प्रशासन-छात्र सम्पर्क में इज़ाफा हो और दोनों पक्ष एक-दूसरे पर भरोसा करते हुए सहयोगात्मक रवैया अपनाएँ। आशा है निकट भविष्य में प्रशासन थोड़ा नरम दृष्टिकोण अपनाए और निर्णयों में छात्रों की भागीदारी बढ़े।

NGO वॉच

पिछले अंक में हमने आपको IIT खड़गपुर के छात्रों द्वारा संचालित समाज सेवी संगठन 'संभव' द्वारा बिहार बाढ़ सहायता समिति को दी गयी सहायता के बारे में जानकारी दी थी। इस बार हम आपको IIT खड़गपुर के छात्रों द्वारा संचालित अन्य समाज सेवी संगठनों द्वारा किये जा रहे कार्यों एवं इनकी नयी योजनाओं के बारे में जानकारी दे रहे हैं।

Gopali Youth Welfare Society (GYWS):-

Gopali Youth Welfare Society(GYWS) की स्थापना वर्ष 2002 में हुई थी तथा यह 2004 में रजिस्टर्ड हुई थी। वर्तमान समय में इसके संरक्षक (patron) IIT खड़गपुर के Dean Of Student Affairs(DOSA) डॉ देबा कुमार त्रिपाठी तथा अध्यक्ष श्रीमती सुपर्णा मंडल हैं। अपनी स्थापना के समय से ही GYWS IIT खड़गपुर के आसपास स्थित गाँवों में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित करता रहा है। साथ ही कंप्यूटर के बारे में युवाओं में जागरूकता फैलाने के लिए GYWS अपने ऑफिस कॉम्प्लेक्स में एक कंप्यूटर सेंटर का भी संचालन करता है। इस वर्ष अप्रैल माह में गोपाली गाँव में संस्था ने आसपास के गाँवों के बच्चों को अँग्रेजी माध्यम में समुचित शिक्षा प्रदान करने के लिए जागृति विद्या मंदिर की स्थापना की है। वर्तमान में इस विद्यालय में करीब 150 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। विद्यालय का संचालन मुख्यतः डोनेशन मनी द्वारा किया जाता है। वर्तमान समय में खड़गपुर के 25 प्रोफेसर नियमित रूप से विद्यालय को मनी डोनेट कर रहे हैं।

GWYS द्वारा आयोजित हिंदी

अभी 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में संस्था ने नेहरू युवा केंद्र के साथ मिलकर जागृति विद्या मंदिर के कैम्पस में कार्यक्रम आयोजित किया था। इसमें प्रो देबा कुमार त्रिपाठी (Dean Of Student Affairs. IIT खड़गपुर), श्रीमती सुपर्णा मंडल (अध्यक्ष, GYWS) एवं प्रो

एन आर मंडल (Head Of Department, OE&NA) भी मौजूद थे। इस अवसर पर बोलते हुए प्रो देबा कुमार त्रिपाठी ने कहा कि हालांकि अँग्रेजी आज के युग में आवश्यक है किंतु संपूर्ण विकास मातृभाषा के



बिना संभव ही नहीं है। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालय के विद्यार्थियों हेतु चित्रकला, भाषण, क्विज तथा देशभक्ति कविता पाठन प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। साथ ही इसी दिन जागृति विद्या मंदिर के विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ संस्था के संरक्षक की

मीटींग हुई तथा उनके विद्यालय के साथ के अनुभव तथा उनके सुझावों के बारे में पूछा गया। बाद में एक मेडिकल कैंप का भी आयोजन हुआ जिसमें डॉ सिद्धार्थ दास, डॉ ए सामन्ता तथा डॉ के सामन्ता ने सौ से भी ज्यादा मरीजों को परामर्श प्रदान किया। कार्यक्रम के अन्त में सभी विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

इन सब के साथ अब GYWS गोपाली में एक Information Centre खोलने जा रहा जो आसपास के लोगों को उनके जरूरत से संबंधी सभी प्रकार की जानकारी प्रदान करेगा। साथ ही संस्था जागृति विद्या मंदिर का विस्तार करने की योजना पर भी काम कर रही है।

श्रद्धा :-

श्रद्धा की शुरुआत वर्ष अक्टूबर 2007 में VGSOM के विद्यार्थियों द्वारा की गयी थी। श्रद्धा अपने कार्यक्रमों के माध्यम से पिछड़े हुए लोगों को मुख्य धारा में लाने का प्रयत्न कर रहा है। श्रद्धा ने लगभग 42000 रु Disha Seema Centre School(DSCS) के विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता हेतु विद्यालय को डोनेट किया था। Disha Seema Centre School की स्थापना IIT KGP के ही कुछ alumni द्वारा गरीब बच्चों की सहायता हेतु 1993 में की गयी थी। गत वर्ष गाँधी जयंती के अवसर श्रद्धा ने MMM Hall में रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया था जो काफी सफल रहा था। अभी हाल में ही श्रद्धा के सदस्यों ने कोलकाता के झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले कुछ बच्चों के साथ एक दिन गुजारा तथा उन्हें चिड़ियाघर घुमाने ले गये। इन बच्चों को विभिन्न सामान्य विषयों के बारे जानकारी भी दी गयी। वर्तमान में संस्था ने कई योजनाएँ बनायीं हैं जो संस्था को अपने उद्देश्य में सफल बनाने में सहायक होंगी।

Illumination - एक नजर

इस दिवाली जब हर जगह दिपावली के दीप जगमगा रहे होंगे, लक्ष्मीपूजा के बाद जब भारतवर्ष का हर कोना पटाखों की गूँज से सराबोर हो रहा होगा, चारों तरफ जब खुशियाँ अँगड़ाई ले रही होंगी, तब हमारे अपने संस्थान IIT खड़गपुर की सबसे सुनहरी परम्परा शायद अपनी अन्तिम साँसें भर रही होगी। IIT में रहने वाले हर परवाने को बस एक ही मलाल होगा कि इस साल दिवाली के दिन आयोजित होने वाली illu और रंगोली की अनोखी पारम्परिक प्रतिस्पर्धा का आयोजन नहीं किया जा रहा है। illu के ना होने से सभी दुःखी हैं। Alumni मेल पर मेल मार रहे हैं। हर जगह शोक विराजमान है। न छात्र, न प्रशासन, कोई भी खुश नहीं है। फिर भी इस वर्ष illu नहीं हो रहा है।

illu है क्या? हमारे प्रथम वर्षीय छात्र तो अभी कल्पना भी नहीं कर सकते कि आखिर कौन सा आकर्षण है जिसके कारण साल दर साल इतनी मेहनत लगाने के बाद भी इस अनोखे प्रकाशोत्सव का आयोजन किया जाता रहा है। illu, जिसकी शुरुआत तो सिर्फ दिपावली के मौके पर सारे हॉल्स को सजाने के लिए हुई थी, ने धीरे धीरे एक अनोखी प्रतियोगिता का रूप ले लिया। यूँ तो इसका पुरस्कार मात्र एक 300 रसगुल्ले की हाँडी ही है पर फिर भी हर हॉल इसे जीतना अपना मुख्य उद्देश्य समझता है। illu सूचक रहा है हॉल्स में एकता का। हर हॉल इस अवसर का इस्तेमाल अपने नए छात्रों के पुराने छात्रों से सम्पर्क एवं मेलजोल बढ़ाने के लिए करता था। illu में जूनियर-सीनियर सब एक साथ मिलकर बिना किसी भेदभाव के महीने भर रात दिन कार्य करते थे, चटाईयाँ बाँधते थे, दिये लगाते थे, और रंगोली बनाते थे। रात 9 बजे काम शुरू होता था और सुबह के 5 बजे तक बिना रुके लगातार चलता था। आलम ये हुआ करता था कि कई रात night-outs मारने के बाद भी लोग

कहीं दीप जले, कहीं दिल, जरा देख ले ऐ परवाने, तेरी कौन सी है मंजिल।

काम करते रहते थे। ऐसा नहीं था कि कभी किसी को बाध्य किया जाता था। बस सबको मजा आता था, और काम होता जाता था। Alumni भी अपने परिवार के साथ illu के बहाने kgp घूमने आते थे।

दिवाली की वो पुरानी रातें हर kgpian के लिए अविस्मरणीय हैं।

शाम तक दिये लगी चटाईयाँ खड़ी रहती थीं। इनमें से तो कुछ 24 फीट तक लम्बी होती थीं। शाम होते ही तेल डालने का काम शुरू होता था। इस समय कई गुप्तचर भी छोड़े जाते थे, जो कि नजर रखते थे कि जज अभी कहाँ हैं। जैसे ही सूचना मिलती कि वो आ रहे हैं, सारे दियों में तेल डालने का कार्य चालू किया जाता। और 5 मिनट के अन्दर 25000 दीप जगमगा उठते। क्या सीनियर, क्या जूनियर सभी टेबलों की छठी मंजिल तक भी चढ़ कर दिये लगा रहे होते। अगर कोई पासआउट आता तो वो भी बिना दिया जलाए कहाँ मानने वाला था। वो जोश... वो जुनून, शायद ही कभी kgp में दिखता है। पर अब सम्भवतः ये कभी न देखने को मिले! इस वर्ष तो कम से कम नहीं ही!

छात्रों के दिल के सबसे करीब रहने वाले इस उत्सव का आयोजन ना होना सम्पूर्ण छात्र समुदाय के लिए अतयंत दुःख की बात है। पर इस वर्ष जिन परिस्थितियों में हमने इसे ना कराने का फैसला किया है वो संभवतः बिलकुल सही है। इसे कुछ छात्रों द्वारा बलिदान की संज्ञा दी जा रही है परन्तु सोचने वाली बात सिर्फ इतनी है कि कहीं इस बलिदान की बेदी पर हमारा यह पर्व सदा—सर्वदा के लिए न चढ़ जाए। आवाज़ आशा करता है कि अगले वर्ष illu वापस ही नहीं आएगा अपितु दोगुनी चमक के साथ सारे कैम्पस को रोशन कर देगा।

IIT - JEE के स्तर में पतन

वर्तमान में हमारा राष्ट्र शिक्षण-संस्थानों से जुड़े कई मुद्दों को लेकर ऊहा-पोह की स्थिति में है। काफी सोच-विचार के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने हाल-फिलहाल में OBC आरक्षण को दी गई सहमति से उपजी एक समस्या का निवारण निकाला। यह समस्या थी आरक्षण की वजह से जन्मी अतिरिक्त रिक्तियों की क्योंकि काफी कम कट-ऑफ होने पर भी आरक्षित वर्ग की सीटें खाली रह गई थीं। अंततः यह फैसला हुआ कि रिक्तियों को सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों से भरा जाएगा, परंतु यह केवल वर्तमान अकादमिक सत्र के लिये ही लागू होगा। यह फैसला किन अर्थों में एक सफल निवारण सिद्ध होता है यह तो आनेवाला समय ही बताएगा क्योंकि सभी संस्थानों में सत्रों की पढ़ाई शुरू हो चुकी है और इस स्थिति में इस निर्णय का पालन करना सरल नहीं होगा। क्या आपको नहीं लगता कि आए दिन ऐसे नए-नए फैसलों अथवा परीक्षणों पर मुहर लगा कर सरकार अपनी विश्वसनीयता को भी चोटिल कर रही है? IITs के संपूर्ण इतिहास में कभी काउन्सिलिंग का दूसरा या तीसरा राउन्ड नहीं हुआ था जो अब चरितार्थ होने वाला है।

और तो और फिलहाल प्रतिष्ठित संयुक्त प्रवेश परीक्षा की चयन प्रक्रिया ने भी उथल-पुथल मचा रखा है। दो वर्षों से लागू 20 percentile शैली तथा JEE में नकारात्मक आंकन के तहत कट-ऑफ अंको का नज़ारा काफी हास्यपद हो गया

है। इस शैली के तहत एक अच्छे कुल अंको वाला विद्यार्थी एक ऐसे विद्यार्थी से मात खा जाता है जिसने सभी विषयों में संतोषजनक प्रदर्शन नहीं किया है।

अक्टूबर 2006 में एक छात्र के अभिभावक द्वारा RTI के तहत कट-ऑफ अंको की माँग करता एक आवेदन फाइल किया गया था। IIT ने दो बार इसकी जवाबदेही की जो कि दोनों ही बार खारिज कर दी गई। ज्ञात हो कि IIT को अभी भी अपनी चयन शैली की प्रमाणिकता को सिद्ध करना बाकी है।

मेधावी छात्रों का बसेरा माने जाने वाले विश्वविख्यात IITs की गरिमा सरकार के मनमाने फैसलों, प्रयोगों एवं राजनैतिक दाँवपेंचों की वजह से डावाडोल होने की कगार पर है। इन सब की वजह से हमारी उच्च शिक्षा पध्ति, छात्रों की गुणवत्ता तथा देश की प्रगति एवं उन्नति पर सवालिया निशान खड़े हो

रहे हैं। आज का छात्र आरक्षण, बढ़ते संस्थानों की वजह से संसाधनों की कमी तथा चयन प्रक्रिया में खामियाँ जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है। और इससे पहले कि छात्रों का विश्वास मेहनत करने से और विश्व का विश्वास IITs से निकलने वाले छात्रों की मेधा से उठ जाए, सरकार को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तथा JEE समिति को चयन प्रक्रिया पर पुनः विचार करने की घोर आवश्यकता है।

फट्चों के लिए नया मेडिकल फॉर्म ?

पिछले दिनों I.I.T. प्रशासन की ओर से प्रथम वर्ष के छात्र/छात्राओं में एक 'Medical History and Personal Particulars' फॉर्म वितरित किया गया और आनन फानन में Original certificate के साथ जमा करने का आदेश दिया गया। छात्रों में आवश्यक मेडीकल सुविधाओं एवं स्पष्ट निर्देशों के अभाव में अफरा तफरी और अनिर्णय की स्थिति देखी गई। छात्रों का कहना है कि B.C.Roy tech. hospital में अपेक्षित सुविधाओं की कमी है और उपलब्ध जाँच सुविधाएँ भी छात्रों की अधिकता के कारन उपलब्ध नहीं करायी जा रही है। छात्रों का यह भी कहना है कि tests काफी महंगे और अनावश्यक है।

इस विषय पर हमारी बात D.O.S.A. से हुई जिनसे कई महत्वपूर्ण बातों का पता चला। D.O.S.A. ने बताया कि इस तरह के medical forms पिछले वर्ष NSS कैम्प में छात्र की मृत्यु को महेनजर रखते हुए सारी I.I.T.'s की आपसी सहमति के तहत वितरित किए गए हैं और और अगले वर्ष से नए छात्रों को रजिस्ट्रेशन से पहले ही फॉर्म दे दिए जाएँगे। उन्होंने छात्रों से अपने खर्च पर जाँच कराने और इमानदारी बरतने की अपेक्षा जताई। रिलायंस मेडिकल बीमा के संदर्भ में D.O.S.A. ने कहा कि ये पहले ही हो चुका है और कार्ड का वितरण जल्द ही कर दिया जाएगा परंतु इस सत्र में छात्रों को अपने खर्च पर ही जाँच कराना होगा। उन्होंने शारीरिक अयोग्यता के किसी भी निर्धारित मापदंड से इनकार किया परंतु यह भी कहा कि



कुछ कंपनियों ने eyesight की वजह से कुछ छात्रों को लेने से मना कर दिया। गंभीर बीमारी से ग्रस्त छात्रों को समय-समय पर अपनी स्थिति स्पष्ट करने को कहा जा सकता है। साथ ही उन्होंने बताया कि परिसर की एक नए अस्पताल और जाँचघर बनाने की योजना है जिसके प्रमुख जाने माने हृदयरोग विशेषज्ञ डा० देवी शेटी होंगे। रेलवे, कलाईकुंडा एयर फोर्स बेस, प्रशासन तथा mint compound kgp. ने भी इस परियोजना में मदद पर अपनी सहमति जताई है। ज्ञात हो की इस परियोजना को 2006 में ही शुरू होना था परंतु खड़गपुर की खराब स्थितियों के कारण प्रगति नहीं हो पाई। D.O.S.A. ने कहा कि अस्पताल अध्यापकों, छात्रों एवं खड़गपुर के आम नागरिकों के लिए आवश्यक है।

उपरीक्त बातों एवं इतिहास को मददेनजर रखते हुए इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि छात्रों का मेडिकल रिकार्ड रखने की आवश्यकता है। पर अचानक से फॉर्म दिए जाने और खड़गपुर में अपर्याप्त मेडिकल सुविधाओं से छात्रों को हो रही परेशानियों से भी इनकार नहीं किया जा सकता। इसके अलावा प्रथम दृष्टया कुछ Tests अनावश्यक भी प्रतीत होते हैं। इस मामले में कुछ ज्यादा पारदर्शिता की आवश्यकता थी। फिर भी छात्रों से अपेक्षा है कि वो इमानदारी बरतेंगे और सहयोग करेंगे।

आवाज़ टीम

मुख्य संपादक: कुमार अभिनव

संपादक: विकास कुमार, पंकज कुमार सोनी, सुरेंद्र केसरी, सुमित सिंघल, अभिनव प्रसाद

सह-संपादक: अनुभव प्रताप सिंह, वरुण प्रकाश

सीनियर रिपोर्टर: अविमुक्तेश भारद्वाज

रिपोर्टर: आशुतोष कुमार मिश्रा, आदित्य मणि झा, मनोज कुमार, सोनल श्रीवास्तव, अनुभा गर्ग, दामिनी गुप्ता, अंकिता मंगल, गौरव अग्रवाल, मयंक कुमार सिंह, श्वेता, अमोल दयानंद सावंत, अमन कुमार, सुशील

जूनियर रिपोर्टर: मधुसूदन शर्मा, स्वाति दास, निष्ठा शर्मा, अभिषेक मीना, निधि हरयानी, प्रतिक भास्कर, रजनीश पट्टिदर, अनुराग कटियार, राहुल डे

वेब: आकाश दीप, सिद्धार्थ दोशी, सुकेश कुमार

पृष्ठ 1 का शेष

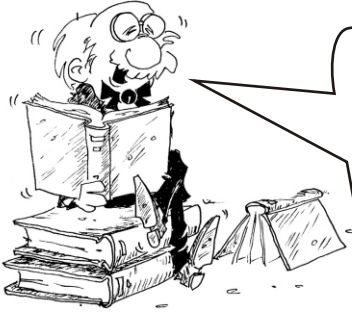
उन्होंने कहा कि छात्रों की समस्याएँ सीधे उन तक न पहुँच पाने से ही उस प्रकार की टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। DOSA ने अगले साल छात्रों की 30% वृद्धि के बाद की समस्याओं पर चिंता व्यक्त की।

यद्यपि मीटींग का प्रयोजन विद्यार्थियों और संस्थान प्रशासन के बीच उत्पन्न मतभेदों का समाधान करना था लेकिन कई प्रश्नों के ठोस उत्तर न दिए जाने और किसी भी कार्य के पूरे होने के समय के बारे में पुष्टी न किए जाने के कारण छात्र इस मीटींग से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे। मले ही इस मीटींग का उद्देश्य छात्रों के समस्याओं का निवारण करना था परंतु इस मीटींग से पहले हुए घटनाक्रम को प्रशासन व छात्रों दोनों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा।

आशा है कि भविष्य में समय समय पर इस प्रकार की मीटींग का आयोजन होगा और छात्र तथा प्रशासन शांतिपूर्वक तरीके से आपसी मतभेद कम कर सकेंगे।

illumination

से आशाएँ ...



दिवाली का मौसम है आया,
संग illu, रंगोली की बहार है लाया।
आओ देखें इस बार क्या नया बनाते हो,
क्या नया concept लगाते हो।
देखें किसमें कितना है दम,
आखिर decision देने बैठे हैं हम।



campus के बाहर तुम जाते हो,
न जाने क्या - क्या गुल खिलाते हो,
अब कसनी है तुम्हारी लगाम,
बन जाओ अब system के गुलाम।
acads पे तो ध्यान नहीं,
extra acads की धुन तुम रमाते हो,
पता नहीं फिर भी तुम,
कैसे पास होते जाते हो।



11 pm का बैन है लगाया,
अपने ही हॉल में हमें बंदी बनाया,
हमपर तो नहीं ज़रा भरोसा,
फिर illu की क्यों ज़ारी है आशा।
illu तो हम नहीं बनायेंगे,
ग्रेड्स की बातें छोड़ो,
वो तो अभी भी नहीं आएँगे,
peace मारते आए हैं,
peace मारते जाएँगे।

इतना क्या रोश है तुममें,
इतने भी नहीं बुरे हम,
आओ मिलकर बैठें हम,
सुलझा देते हैं तुम्हारे गम।

we will look into the matter

water

placements

11pm



जान बची लाखों पाए,
illu से भगवान बचाए,
ये तो बहुत पहले हो जाना था,
खेर, देर आये, दुरुस्त आये।



रहिमन illu राखिये,
बिन illu सब सून।
illu गये न ऊबरे,
धीमी KGP की धुन।।



